D-I(H) Paper-II Sociology

Critically examine Comte's laws of three stage.

अपने जीवन के 24 वें वर्ष अर्थात 1822 में Auguste Comte ने प्रगति से सम्बन्धित नियमों का प्रतिपादन किया। सामाजिक विचारों के क्षेत्र में कॉम्टे का यह नियम महत्वपूर्ण योगदान है। कॉम्टे ने अपने विचार को इस रूप में प्रस्तुत किया है - हमारी प्रत्येक प्रमुख अवधारणा, हमारे ज्ञान की प्रत्येक शाखा एक के बाद एक तीन सैद्धांतिक दशाओं से होकर ही गुजरती है - आध्यात्मिक (Theological), तात्विक (Metaphysical) तथा वैज्ञानिक (Scientific or Positive)। कॉम्टे के उपरोक्त नियम के अनुसार सामाजिक या प्राकृतिक घटनाओं को समझने के लिए प्रत्येक समाज का मानसिक दृष्टिकोण इन्हीं तीन अवस्थाओं में परिवर्तित होता है। यह तीन अवस्थायें निम्नलिखित हैं :-

1. Theological or Fictitious stage (धार्मिक या काल्पनिक स्तर) -> इस स्तर पर मानव समस्त घटनाओं का सम्बन्ध प्रकृति तथा अलौकिक शक्ति से स्थापित करता है। इस स्तर पर व्यक्ति यह विश्वास करता है कि बाढ़, अकाल, महामारी, सर्दी, गर्मी, सुखाड़, भूकम्प, दिन-रात, स्नेह प्रेम, बीमारी आदि घटनाओं के घटित होने का कारण कोई दैवीय, कोई अलौकिक शक्ति है। इस स्तर पर विवेक या मस्तिष्क का प्रयोग नहीं होता, बल्कि लोग अंधविश्वास करके यह मान लेते हैं कि देवी-देवता अपनी स्वतंत्र इच्छा से काम करते हैं और उनके कर्मों के प्रभाव से ही प्रत्येक घटना घटित होती है। कॉम्टे ने इस अवस्था के तीन स्तर बताये हैं :-

(A) प्रेतवाद (Fetishism) -> इस अवस्था में मनुष्य संसार की प्रत्येक वस्तु को चेतन मानता है। यहाँ तक कि नदी, पहाड़, झरना आदि को भी चेतन मानता है। इस अवस्था में मनुष्य आत्मा-प्रेतात्मा में विश्वास करता है तथा झाड़-फूँक, जादू-टोना आदि को मानता है। इसमें मनुष्य की अवधारणा रूढ़िवाद तथा अन्धविश्वास के चंगुल में फँसी रहती है।

(B) बहुदेवत्ववाद (Polytheism) -> इस अवस्था में मानव की विचारधारा संदेह तथा भय ग्रसित रहती है। इसमें मनुष्य देवी-देवताओं की पूजा श्रद्धावश नहीं बल्कि भयवश करता है। इस अवस्था में भी जादू-टोना, तंत्र-मंत्र में अधिक विश्वास करता है।

(C) अद्वैतवाद (Monotheism) -> यह अवस्था आध्यात्मक का अंतिम स्तर है। इसमें मानव बहुदेवतावाद के स्थान पर एकेश्वरवाद में विश्वास करने लगता है। इस अवस्था में मनुष्य का चिन्तन इस बात पर केन्द्रित हो जाता है कि ईश्वर एक है तथा वे ही सम्पूर्ण सृष्टि का निर्माणकर्ता तथा संहारकर्ता दोनों है।

Scanned with CamScanner

2. तात्विक स्तर (Metaphysical Stage) → मानव चिन्तन की यह अवस्था प्रथम अवस्था का संशोधित रूप है। इस अवस्था में ईश्वर की वैयक्तिक शक्ति का लोप होने लगा तथा बौद्धिक चेतना का विकास हुआ। इस स्तर पर वह प्रत्येक प्रश्नों का तर्कपूर्ण उत्तर चाहता है, जैसे- ईश्वर कैसा है? उसका आकार क्या है? इस स्तर पर मानव का चिन्तन तर्कयुक्त हो जाता है। प्रथम अवस्था की भाँति वह किसी भी तथ्य को आँख बन्द करके स्वीकार नहीं करता बल्कि उसे तर्क की कसौटी पर जाँच करता है। इस स्तर पर रूढ़िवादिता तथा अंधविश्वास का पर्दा हटने लगता है। इस स्तर पर केवल ईश्वर की सत्ता पर विश्वास किया जाता है। इस प्रकार अज्ञात शक्तियों या सत्ताओं को प्रत्येक घटना का कारण मानना ही इस अवस्था की विशेषता है। कॉम्टे ने तात्विक स्तर की व्याख्या इस प्रकार की है- "तात्विक अवस्था में, जो कि धार्मिक अवस्था का संशोधित रूप है, मानव मस्तिष्क यह मान लेता है कि अलौकिक शक्ति के स्थान पर अमूर्त शक्तियों की सत्ता सभी जीवों में अन्तर्निहित है और समस्त घटना चक्र को वह उत्पन्न करता है।"

इस अवस्था में प्रकृति के विभिन्न अंगों को उत्पन्न या संचालित करने वाला कोई सर्वशक्तिमान देवता नहीं होता है। इसमें अलौकिक एवं दैवी शक्तियों के स्थान पर एक अदृश्य अथवा अमूर्त शक्ति में विश्वास किया जाता है।

3. वैज्ञानिक अथवा प्रत्यक्षात्मक अवस्था (Scientific or positive Stage) → मानव चिन्तन की अंतिम अवस्था वैज्ञानिक अथवा प्रत्यक्षात्मक अवस्था है जिसमें मानव केवल उन तथ्यों पर विश्वास करता है जो प्रत्यक्ष देखे या अनुभव किए जा सके। इस अवस्था में मानव का मस्तिष्क अच्छी तरह विकसित हो जाता है तथा उसकी चिन्तन शक्ति वैज्ञानिक हो जाती है। इस स्तर के सम्बन्ध में कॉम्टे ने स्वयं लिखा है "वैज्ञानिक स्तर में मानव का मस्तिष्क, निरपेक्ष धारणाओं, विश्व की उत्पत्ति एवं लक्ष्य तथा घटनाओं के कारणों की निरर्थक अन्वेषणों का त्याग कर देता है तथा नियमों के स्थिर सम्बन्धों के अध्ययन में लग जाता है।"

अब हमें चिन्तन की विभिन्न अवस्थाओं तथा सामाजिक संगठन के बीच पाए जाने वाले सम्बन्धों पर विचार करना है। कॉम्टे का कहना है कि चिन्तन प्रत्येक अवस्था में सामाजिक संगठन का विशिष्ठ रूप होता है। इनके अनुसार मानवीय चिन्तन में प्रत्येक स्तर पर एक विशेष प्रकार का सामाजिक संगठन पाया जाता है जो इस प्रकार है :-

1. धार्मिक अवस्था में सामाजिक संगठन → मानवीय चिन्तन की धार्मिक अवस्था में अन्य व्यवस्थाओं की भाँति सामाजिक संगठन को भी ईश्वरीय देन

Scanned with CamScanner

माना जाता है। समाज का प्रत्येक अंग ईश्वर की इच्छा से संचालित एवं नियंत्रित होता है। चिन्तन की अवस्था में सैनिक एवं एकतंत्रीय सामाजिक संगठन पाया जाता है इस अवस्था में ईश्वर को सर्वशक्तिमान सत्ता माना जाता है। चिन्तन की इस अवस्था में राजा को ईश्वर का अवतार माना जाता है। राजा के शब्द और नियम ईश्वर के शब्द और नियम माने जाते हैं राजा की आज्ञा की अवहेलना करना घोर नैतिक अपराध माना जाता है कॉम्टे ने स्वयं लिखा है कि "चिन्तन की धार्मिक अवस्था सामाजिक संगठन की असंत सरल कल्पना पर आधारित है। मानवीय बुद्धि के स्थान पर दैवी सत्ता सामाजिक संरचना और संगठन पर आधारित होती है" इस प्रकार चिन्तन की यह अवस्था काल्पनिक मान्यताओं पर आधारित होती है।

2. तात्विक अवस्था में सामाजिक संगठन → चिन्तन की इस अवस्था में कल्पना का स्थान भावना ले लेती है। इस अवस्था में ऐसी सरकार का जन्म होता है जिसमें अमूर्त अधिकारों के सिद्धांतों की प्रधानता होती है इस अवस्था में ईश्वरीय अधिकार का स्थान प्राकृतिक अधिकार ले लेता है। चिन्तन की इस अवस्था में सामाजिक संगठन कानूनी, औपचारिक एवं संरचनात्मक हो जाता है। इस अवस्था में राजा को ईश्वर का अवतार नहीं माना जाता है

3. वैज्ञानिक अथवा प्रत्यक्षात्मक अवस्था में सामाजिक संगठन → मानवीय चिन्तन की इस अवस्था में सामाजिक संगठन में आमूल परिवर्तित होने लगते हैं औद्योगिक विकास तीव्र से होने लगता है इसमें सामाजिक संगठन अवलोकन, परीक्षण और प्रयोगों की व्यवस्थित पद्धति पर आधारित होता है शोध, अनुसंधान एवं अविष्कारों की लहर सी आ जाती है। सामाजिक पुनर्निर्माण में शिक्षा और मानवीय कल्पना को अधिक महत्व दिया जाता है।

यद्यपि कॉम्टे का त्रिस्तरीय नियम व्यवहारिक तथा उपयुक्त है तथापि यह आलोचनाओं और अपवादों से मुक्त नहीं है। कॉम्टे का कहना है कि चिन्तन में उपरोक्त अवस्थायें एक के बाद एक क्रमशः आती है किंतु आलोचकों का कहना है कि ये तीनों अवस्थायें एक ही समाज अथवा मस्तिष्क में एक ही साथ विद्यमान रह सकती है। स्पेन्सर ने कॉम्टे द्वारा प्रतिपादित त्रिस्तरीय नियम की आलोचना करते हुए लिखा है कि "ये चिन्तन की तीन स्तर ही नहीं है वरन् ये तो चिन्तन अवस्था का धरातल है।" बोगार्डस ने इस नियम की आलोचना करते हुए कहा है कि कॉम्टे एक चौथे प्रकार के चिन्तन की धारणा की अवहेलना कर गए हैं। चिन्तन का यह स्तर समाजीकृत चिन्तन है।

S. N. Choudhary
L.N.M.U

Scanned with CamScanner